

विषय — भगवान मनुष्य के संरक्षक हैं

स्वर्ण पाठ: मत्ती 26: 53

"क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 91: 1-7, 11, 12

- 1 जोपरमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
- 2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, कि वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।
- 3 वह तो तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा।
- 4 वह तुझे अपने पंखों की आँड़ में ले लेगा, और तू उसके पैरों के नीचे शरण पाएगा; उसकी सच्चाई तेरे लिये ढाल और झिलम ठहरेगी।
- 5 तू न रात के भय से डरेगा, और न उस तीर से जो दिन को उड़ता है,
- 6 न उस मरी से जो अन्धेरे में फैलती है, और न उस महारोग से जो दिन दुपहरी में उजाड़ता है॥
- 7 तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे पास न आएगा।
- 11 क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा, कि जहां कहीं तू जाए वे तेरी रक्षा करें।
- 12 वे तुझ को हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 91: 14-16

- 14 उसने जो मुझ से स्नेह किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।
- 15 जब वह मुझ को पुकारे, तब मैं उसकी सुनूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा, मैं उसको बचा कर उसकी महिमा बढ़ाऊंगा।
- 16 मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपने किए हुए उद्धार का दर्शन दिखाऊंगा॥

## 2. 2 राजा 2: 1 (यह), 7-11, 12 (से 1st.), 14, 15 (से 1st.), 19, 21 (से 1st.), 21 (और कहा), 22

- 1 ...जब यहोवा एलियाह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था, तब एलियाह और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल से चले।
- 7 और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से पचास जन जा कर उनके साम्हने दूर खड़े हुए, और वे दोनों यरदन के तीर खड़े हुए।
- 8 तब एलियाह ने अपनी चद्दर पकड़ कर ऐंठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पार उतर गए।
- 9 उनके पार पहुंचने पर एलियाह ने एलीशा से कहा, उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिये जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं वह मांग; एलीशा ने कहा, तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।
- 10 एलियाह ने कहा, तू ने कठिन बात मांगी है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा।
- 11 वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्नि मय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन को अलग अलग किया, और एलियाह बवंडर में हो कर स्वर्ग पर चढ़ गया।
- 12 और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्साएल के रथ और सवारो! जब वह उसको फिर देख न पड़ा, तब उसने अपने वस्त्र पाड़े और फाड़कर दो भाग कर दिए।
- 14 और उसने एलियाह की वह चद्दर जो उस पर से गिरी थी, पकड़ कर जल पर मारी और कहा, एलियाह का परमेश्वर यहोवा कहां है? जब उसने जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया और एलीशा पार हो गया।
- 15 उसे देखकर भविष्यद्वक्ताओं के चेले जो यरीहो में उसके साम्हने थे, कहने लगे, एलियाह में जो आत्मा थी, वही एलीशा पर ठहर गई है; सो वे उस से मिलने को आए और उसके साम्हने भूमि तक झुक कर दण्डवत की।
- 19 उस नगर के निवासियों ने एलीशा से कहा, देख, यह नगर मनभावने स्थान पर बसा है, जैसा मेरा प्रभु देखता है परन्तु पानी बुरा है; और भूमि गर्भ गिरानेवाली है।
- 21 तब वह जल के सीते के पास निकल गया, और उस में नमक डालकर कहा, यहोवा यों कहता है, कि मैं यह पानी ठीक कर देता हूँ, जिस से वह फिर कभी मृत्यु वा गर्भ गिरने का कारण न होगा।
- 22 एलीशा के इस वचन के अनुसार पानी ठीक हो गया, और आज तक ऐसा ही है।

## 3. भजन संहिता 68: 17

- 17 परमेश्वर के रथ बीस हजार, वरन हजारों हजार हैं; प्रभु उनके बीच में है, जैसे वह सीनै पवित्र स्थान में है।

## 4. निर्गमन 23: 20, 25

- २० सुन, मैं एक दूत तेरे आगे आगे भेजता हूं जो मार्ग में तेरी रक्षा करेगा, और जिस स्थान को मैं ने तैयार किया है उस में तुझे पहुंचाएगा।
- २५ और तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करना, तब वह तेरे अन्न जल पर आशीष देगा, और तेरे बीच में से रोग दूर करेगा।

## ५. २ राजा ६: ८-२३

- ८ अराम का जाजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति कर के अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी।
- ९ तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से हो कर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करने वाले हैं।
- १० तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा कर के परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेज कर, अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन् बहुत बार हुआ।
- ११ इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुला कर उन से पूछा, क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं,
- १२ एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन की कोठरी में बोलता है।
- १३ राजा ने कहा, जा कर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेज कर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह समाचार मिला कि वह दोतान में है।
- १४ तब उसने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया।
- १५ भौर को परमेश्वर के भक्त का ठहलुआ उठा और निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?
- १६ उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।
- १७ तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।
- १८ जब अरामी उसके पास आए, तब एलीशा ने यहोवा से प्रार्थना की कि इस दल को अन्धा कर डाल। एलीशा के इस वचन के अनुसार उसने उन्हें अन्धा कर दिया।
- १९ तब एलीशा ने उन से कहा, यह तो मार्ग नहीं है, और न यह नगर है, मेरे पीछे हो लो; मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम ढूँढ़ रहे हो पहुंचाऊंगा। तब उसने उन्हें शोमरोन को पहुंचा दिया।
- २० जब वे शोमरोन में आ गए, तब एलीशा ने कहा, हे यहोवा, इन लोगों की आंखें खोल कि देख सकें। तब यहोवा ने उनकी आंखें खोलीं, और जब वे देखने लगे तब क्या देखा कि हम शोमरोन के मध्य में हैं।
- २१ उन को देखकर इस्राएल के राजा ने एलीशा से कहा, हे मेरे पिता, क्या मैं इन को मार लूं? मैं उन को मार लूं?
- २२ उसने उत्तर दिया, मत मार। क्या तू उन को मार दिया करता है, जिन को तू तलवार और धनुष से बन्धुआ बना लेता है? तू उन को अन्न जल दे, कि खा पीकर अपने स्वामी के पास चले जाएं।

<sup>23</sup> तब उसने उनके लिये बड़ी जेवनार की, और जब वे खा पी चुके, तब उसने उन्हें बिदा किया, और वे अपने स्वामी के पास चले गए। इसके बाद अराम के दल इस्लाम के देश में फिर न आए।

## 6. यशायाह 63: 9 (देवदूत), 16 (हे तुम)

<sup>9</sup> ... और उसके समुख रहने वाले दूत ने उनका उद्धार किया; प्रेम और कोमलता से उसने आप ही उन को छुड़ाया; उसने उन्हें उठाया और प्राचीनकाल से सदा उन्हें लिए फिरा।

<sup>16</sup> ... हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ाने वाला है; प्राचीनकाल से यहीं तेरा नाम है।

## विज्ञान और स्वास्थ्य

### 1. 151: 23-24

जिस दिव्य मन ने मनुष्य को बनाया वह उसकी अपनी छवि और समानता को बनाए रखता है।

### 2. 331: 11 (यह)-17

शास्त्रों का अर्थ है कि ईश्वर सब कुछ है। इससे यह पता चलता है कि ईश्वरीय मन और उनके विचारों के अलावा किसी भी चीज़ में वास्तविकता या अस्तित्व नहीं है। शास्त्र यह भी घोषणा करते हैं कि ईश्वर आत्मा है। इसलिए आत्मा में सब कुछ सामंजस्य है, और कोई मतभेद नहीं हो सकता; सब कुछ जीवन है, और कोई मृत्यु नहीं है। भगवान के ब्रह्मांड में सब कुछ उसे व्यक्त करता है।

### 3. 84: 3-7

प्राचीन पैगंबरों ने आध्यात्मिक दृष्टि से अपनी दूरदर्शिता हासिल की, दृष्टिकोण को शामिल किया, न कि बुराई और गलत तथ्य को दूर करने से दूर किया, — भविष्य की निष्ठा और मानवीय विश्वास के आधार पर भविष्य की भविष्यवाणी करना।

### 4. 269: 9 (इसान)-11, 14-20

मानव दर्शन ने ईश्वर को मनुष्य जैसा बना दिया है। क्रिश्वियन साइंस मनुष्य को ईश्वरतुल्य बनाता है। पहली त्रुटि है; उत्तरार्द्ध सत्य है....तत्त्वमीमांसा चीजों को विचारों में बदल देता है, और आत्मा के विचारों के लिए अर्थ की वस्तुओं का आदान-प्रदान करता है।

ये विचार आध्यात्मिक चेतना के बिल्कुल वास्तविक और मूर्त हैं, और भौतिक लाभ की वस्तुओं और विचारों पर उनका यह लाभ है - वे अच्छे और शाश्वत हैं।

### 5. 581: 4-7

स्वर्गदूतों। ईश्वर के विचार मनुष्य को पास करते हैं; आध्यात्मिक अंतर्ज्ञान, शुद्ध और परिपूर्ण; अच्छाई, पवित्रता, और अमरता की प्रेरणा, सभी बुराई, कामुकता और नश्वरता का प्रतिकार करती है।

## 6. 518: 13-23

ईश्वर स्वयं का विचार देता है, अधिक के लिए कम करने के लिए, और बदले में, उच्च हमेशा कम की रक्षा करता है। सभी को एक ही सिद्धांत, या पिता, को एक भव्य भाईचारे में रखते हुए, आत्मा में समृद्ध गरीबों की मदद करते हैं। और धन्य है वह आदमी जो दूसरे की भलाई में अपनी भलाई जानता है, अपने भाई की आवश्यकता को देखता है और उसकी आपूर्ति करता है। प्रेम कमजोर आध्यात्मिक को, अमरता, और अच्छाई देता है, जो सभी के माध्यम से चमकता है जैसे कि कली के माध्यम से खिलता है। ईश्वर की सभी विविध अभिव्यक्तियाँ स्वास्थ्य, पवित्रता, अमरता - अनंत जीवन, सत्य और प्रेम को दर्शाती हैं।

## 7. 566: 29-8

पुराना नियम स्वर्गदूतों, परमेश्वर के दिव्य संदेशों, विभिन्न कार्यालयों को प्रदान करता है। माइकल की विशेषता आध्यात्मिक शक्ति है। वह पाप, शैतान की शक्ति के खिलाफ स्वर्ग के बहुरूपियों का नेतृत्व करता है और पवित्र युद्धों से लड़ता है। गेब्रियल के पास हमेशा प्यार की उपस्थिति की भावना प्रदान करने का अधिक शांत कार्य है। ये स्वर्गदूत हमें गहराई तक पहुँचाते हैं। सत्य और प्रेम, शोक की घड़ी में आते हैं, जब मजबूत विश्वास या आध्यात्मिक शक्ति कुश्ती और भगवान की समझ के माध्यम से प्रबल होती है। उनकी उपस्थिति के गेब्रियल में कोई प्रतियोगिता नहीं है। असीम, सदा-सदा के लिए, सब प्रेम है, और न कोई त्रुटि है, न कोई पाप, न बीमारी, न मृत्यु। प्यार के खिलाफ, ड्रैगन लंबे समय तक युद्ध नहीं करता है, क्योंकि वह दिव्य सिद्धांत द्वारा मारा जाता है। ड्रैगन के खिलाफ सत्य और प्रेम प्रबल होता है क्योंकि ड्रैगन उनसे युद्ध नहीं कर सकता। इस प्रकार मांस और आत्मा के बीच संघर्ष समाप्त हो जाता है।

## 8. 469: 13 (यह)-17

त्रुटि का नाश करने वाला महान सत्य है कि भगवान, अच्छा, एकमात्र दिमाग है, और यह कि अनंत मन के विपरीत - जिसे शैतान या बुराई कहा जाता है - मन नहीं है, सत्य नहीं है, बल्कि त्रुटि, बुद्धि या वास्तविकता के बिना है।

## 9. 387: 24-4

यह तथाकथित नश्वर दिमाग, गलत मामले का एक नियम है, जो सभी चीजों को अप्रिय बनाता है।

ईसाइयत का इतिहास अपने स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान मन, द्वारा मनुष्य पर समर्थित शक्ति और रक्षा शक्ति के उदात्त प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को विश्वास और समझ प्रदान करता है जिससे वह खुद का बचाव करता है, न केवल प्रलोभन से, बल्कि शारीरिक से।

ईसाई शहीद क्रिश्चियन साइंस के पैगंबर थे। दिव्य सत्य की उत्थान और अभिषेक शक्ति के माध्यम से, उन्होंने भौतिक इंद्रियों पर विजय प्राप्त की, एक ऐसी जीत जिसे केवल विज्ञान ही समझा सकता है।

## 10. 503: 12-17

ईश्वरीय विज्ञान, ईश्वर का शब्द, त्रुटि पर अंधेरे के लिए कहता है, "ईश्वर सब में है," और हमेशा मौजूद प्रेम का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित करता है। इसलिए अनन्त आश्चर्य, - कि अनंत अंतरिक्ष अनगिनत आध्यात्मिक रूपों में उसे दर्शाते हुए, ईश्वर के विचारों से अभिभूत है।

## 11. 9: 17-24, 32 केवल

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

लगातार प्रार्थना करना सही काम करने की इच्छा है।

## 12. 269: 21-28

भौतिक इंद्रियों की गवाही न तो पूर्ण है और न ही दिव्य है। इसलिए मैं अपने आप को यीशु के उपदेशों पर, भविष्यद्वक्ताओं के, और मन के विज्ञान की गवाही पर अनारक्षित रूप से रोपित करता हूं। अन्य नींव वहाँ कोई नहीं हैं। अन्य सभी प्रणालियाँ - सिस्टम पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से ज्ञान के आधार पर भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं - हवा से हिलती हुई चट्टानें हैं, न कि चट्टान पर बने मकान।

## 13. 224: 29-31 (से 2nd.)

परमेश्वर की शक्ति बंदी को मुक्ति दिलाती है। कोई भी शक्ति ईश्वरीय प्रेम का सामना नहीं कर सकती।

## 14. 372: 14-17

जब इंसान क्रिश्वियन साइंस को पूरी तरह से दिखा देगा, तो वह परफेक्ट हो जाएगा। वह न तो पाप कर सकता है, न दुख झेल सकता है, न ही चीजों के अधीन हो सकता है, और न ही भगवान के नियम को तोड़ सकता है। इसलिए वह स्वर्ग के फरिश्तों जैसा होगा।

## 15. 470: 32-5

साइंस में ईश्वर और मनुष्य के संबंध, ईश्वरीय सिद्धांत और विचार अविनाशी हैं; और विज्ञान जानता है कि कोई चूक नहीं हुई है और न ही सद्ग्राव में लौटा लेकिन यह ईश्वरीय आदेश या आध्यात्मिक कानून रखता है, जिसमें भगवान और वह जो कुछ भी बनाता है वह परिपूर्ण और शाश्वत है, अपने सनातन इतिहास में अपरिवर्तित रहा है।

## दैनिक कर्तव्यों

इस बाइबल पाठ को प्लेनफाइल्ड क्रिश्वियन साइंस चर्च, इंडिपैर्टेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एडडी ने क्रिश्वियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

## मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्वियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6